SKPF-Wincompete Test Series 2026

टेस्ट 02 - राजस्थान इतिहास (आधुनिक)

प्रश्नोत्तर एवं व्याख्या (Questions with Detailed Explanations)

प्रश्न 1: महर्षि दयानन्द सरस्वती के राजस्थान आगमन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए...

सही उत्तर: D

व्याख्या: महर्षि दयानन्द सरस्वती राजस्थान के पुनर्जागरण के शिखर पुरुष थे। उनका राजस्थान में प्रथम आगमन जून 1865 में करौली रियासत में हुआ था। इसके बाद उन्होंने जयपुर, भरतपुर और उदयपुर की यात्राएं कीं। उदयपुर प्रवास (1882) के दौरान उन्होंने मेवाड़ के राजकीय संरक्षण में अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय संस्करण का लेखन कार्य किया। जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय के दरबार में प्रवास के दौरान उन्हें षड्यंत्रपूर्वक विष दिया गया, जिसके बाद 30 अक्टूबर 1883 को अजमेर में उनका निर्वाण हुआ। ये तीनों तथ्य उनकी जीवनी और राजस्थान के आधुनिक इतिहास के महत्वपूर्ण अंग हैं।

प्रश्न 2: कथन (A): स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अजमेर में 'वैदिक यंत्रालय' (Vedic Press) की स्थापना की थी।

सही उत्तर: A

व्याख्या: स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अजमेर को अपने विचारों के प्रचार-प्रसार का केंद्र बनाया था। उन्होंने यहाँ 'वैदिक यंत्रालय' (प्रिंटिंग प्रेस) की स्थापना की ताकि 'सत्यार्थ प्रकाश' और अन्य वैदिक साहित्य का मुद्रण सुलभ और सस्ता हो सके। अजमेर की भौगोलिक स्थिति और उस समय की अर्ध-स्वायत्त प्रशासनिक व्यवस्था ने इसे प्रेस संचालन के लिए अनुकूल बनाया। यह प्रेस आर्य समाज की गतिविधियों को वैचारिक मजबूती प्रदान करने वाली सबसे महत्वपूर्ण संस्था सिद्ध हुई। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

प्रश्न 3: कथन: महर्षि दयानन्द सरस्वती ने राजस्थान की रियासतों में 'स्वधर्म', 'स्वदेशी' और 'स्वराज्य' का मंत्र फूँका।

सही उत्तर: C

व्याख्या: दयानन्द सरस्वती के 'स्व' (Self) आधारित विचारों ने भारतीयों के स्वाभिमान को जगाया। जब उन्होंने कहा कि "बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य भी अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बेहतर है", तो उन्होंने पहली बार राजस्थान की सामंती जनता में राजनीतिक चेतना का बीजारोपण किया। उनके धार्मिक सुधारों ने सामाजिक समानता की नींव रखी, जो आगे चलकर प्रजामंडल आंदोलनों के लिए एक ठोस वैचारिक मंच साबित हुई। इसी कारण दोनों निष्कर्ष तर्कसंगत और ऐतिहासिक रूप से सिद्ध हैं।

प्रश्न 4: राजस्थान के सामाजिक पुनर्जागरण से संबंधित संस्थाओं और उनके स्थापना केंद्रों के संदर्भ में कौन सा विकल्प असंगत है?

सही उत्तर: C

व्याख्या: विकल्प C असंगत है क्योंकि 'वैदिक यंत्रालय' (Vedic Press) की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने **अजमेर** में की थी, न कि जोधपुर में। जोधपुर में तो उन्हें विष दिए जाने की दुखद घटना हुई थी। अन्य विकल्प सही हैं: परोपकारिणी सभा की स्थापना 1883 में उदयपुर में हुई (जिसके प्रथम अध्यक्ष महाराणा सज्जन सिंह थे), आर्य समाज की पहली राजस्थान शाखा 1881 में अजमेर में खुली और संप सभा की स्थापना 1883 में गोविंद गिरी ने सिरोही में की थी।

प्रश्न 5: हरविलास शारदा और 'शारदा एक्ट' (1929) के प्रावधानों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए...

सही उत्तर: D

व्याख्या: अजमेर के हरविलास शारदा राजस्थान के एक महान समाज सुधारक और विद्वान थे।

wincompete

उनके अथक प्रयासों से 1929 में 'बाल विवाह निरोधक अधिनियम' पारित हुआ, जिसे 'शारदा एक्ट' कहा जाता है। इसमें विवाह के लिए आयु सीमा (लड़के 18, लड़की 14) तय की गई थी। साथ ही, उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंदू सुपीरियरिटी' के माध्यम से पाश्चात्य विद्वानों के उन दावों को खारिज किया जो भारतीय संस्कृति को पिछड़ा बताते थे। ये सभी तथ्य उनके योगदान की पुष्टि करते हैं।

प्रश्न 6: कथन (A): राजस्थान में ब्रह्म समाज की तुलना में आर्य समाज अधिक सफल रहा और इसका प्रसार अधिक व्यापक हुआ।

सही उत्तर: A

व्याख्या: ब्रह्म समाज की विचारधारा अधिक बौद्धिक और पाश्चात्य दर्शन से प्रभावित थी, जो राजस्थान के ग्रामीण और सामंती समाज के साथ समन्वय नहीं कर पाई। इसके विपरीत, आर्य समाज का 'वेदों की ओर लौटो' का आह्वान स्थानीय परंपराओं, वैदिक धर्म और सांस्कृतिक मूल्यों के बहुत करीब था। इसने आम जनता को अपनी जड़ों से जुड़ने का अवसर दिया, जिससे यह राजस्थान में अधिक लोकप्रिय हुआ। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और व्याख्या सही है।

प्रश्न 7: कथन: आर्य समाज ने राजस्थान में दलित शिक्षा और शुद्धि आंदोलन के साथ-साथ 'डी.ए.वी.' (DAV) स्कूलों की श्रृंखला स्थापित की।

सही उत्तर: C

व्याख्या: आर्य समाज ने शिक्षा को समाज सुधार का मुख्य साधन माना। अजमेर और अन्य स्थानों पर खोले गए डी.ए.वी. स्कूलों ने युवाओं को आधुनिक ज्ञान के साथ-साथ 'स्वदेशी' और 'राष्ट्रीयता' का पाठ पढ़ाया। इन्हीं संस्थाओं में शिक्षित युवाओं ने आगे चलकर राजस्थान की रियासतों में सामंती दमन के विरुद्ध आवाज उठाई और प्रजामंडल आंदोलनों को नेतृत्व प्रदान किया। इस प्रकार, शैक्षणिक विकास सीधे तौर पर राजनीतिक स्वतंत्रता के मार्ग से जुड़ा हुआ था।

प्रश्न 8: आर्य समाज के प्रभाव के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प असंगत है?

सही उत्तर: C

व्याख्या: विकल्प C असंगत है क्योंकि 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना का अधिकांश भाग तो उदयपुर में पूर्ण हुआ था, लेकिन इसका **प्रथम प्रकाशन अजमेर** से हुआ था। आर्य समाज की अन्य गतिविधियाँ जैसे चाँदकरण शारदा द्वारा अजमेर में किया गया दलितोद्धार कार्य और 1881 में अजमेर में ही पहली शाखा की स्थापना ऐतिहासिक तथ्य हैं। शुद्धि आंदोलन ने भी राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रों में धर्म परिवर्तन कर चुके लोगों को पुनः हिंदू धर्म में लाने में भूमिका निभाई थी।

प्रश्न 9: मेयो कॉलेज (अजमेर) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए...

सही उत्तर: D

व्याख्या: मेयो कॉलेज की स्थापना 1875 में अजमेर में हुई थी। लॉर्ड मेयो ने 1870 के दरबार में इसके निर्माण का विचार प्रस्तुत किया था ताकि भारतीय राजकुमारों को ब्रिटिश तर्ज पर शिक्षित कर एक वफादार वर्ग बनाया जा सके। इसके निर्माण हेतु सर्वाधिक राशि जयपुर रियासत ने दी थी। इसके पहले छात्र अलवर के महाराजा मंगल सिंह थे और प्रथम प्राचार्य सर ओलिवर सेंट जॉन थे। यह कॉलेज 'पूर्व के ईटन' (Eton of the East) के नाम से विख्यात हुआ।

प्रश्न 10: कथन (A): अंग्रेजों ने राजस्थान में पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार मुख्य रूप से 'मानसिक गुलामी' और प्रशासनिक सुगमता हेतु वफादार वर्ग तैयार करने के लिए किया था।

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन और कारण दोनों अपनी जगह सत्य हैं, लेकिन कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है। अंग्रेजों का उद्देश्य 'वफादार वर्ग' तैयार करना था, जबकि पाश्चात्य शिक्षा से युवाओं को मिले 'उदारवाद और लोकतंत्र' के विचार उस शिक्षा का एक 'अनपेक्षित' या 'उप-परिणाम' (By-product) थे। शिक्षा ने जहाँ एक ओर अंग्रेजों के लिए बाबू तैयार किए, वहीं दूसरी ओर जयनारायण व्यास और अर्जुन लाल सेठी जैसे क्रांतिकारी भी तैयार किए। व्याख्या में उद्देश्य और परिणाम के बीच का अंतर स्पष्ट होना चाहिए।

प्रश्न 11: कथन: राजस्थान में आधुनिक शिक्षा का सूत्रपात अजमेर से हुआ और धीरे-धीरे

wincompete

विभिन्न रियासतों ने भी अंग्रेजी स्कूलों की स्थापना की।

सही उत्तर: B

व्याख्या: निष्कर्ष 1 गलत है क्योंकि 19वीं सदी के मध्य तक आधुनिक शिक्षा केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित थी, और ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक पाठशालाएं ही सक्रिय थीं। निष्कर्ष 2 बिल्कुल सही है क्योंकि पाश्चात्य शिक्षा के माध्यम से आए तार्किक विचारों ने ही समाज सुधारकों को सती प्रथा और कन्या वध जैसी कुरीतियों पर प्रहार करने की शक्ति और वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। इस प्रकार शिक्षा ने समाज में सकारात्मक वैचारिक क्रांति को जन्म दिया।

प्रश्न 12: राजस्थान में आधुनिक शिक्षा के विकास से संबंधित युग्मों में से कौन सा असंगत है?

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि जैबज कैरी (Jabez Carey) ने अजमेर में प्रथम आधुनिक स्कूल की स्थापना **1819 ई.** में की थी, न कि 1836 ई. में। 1836 ई. में तो अजमेर में 'गवर्नमेंट स्कूल' की स्थापना हुई थी। अन्य विकल्प सही हैं: जयपुर में पृथक शिक्षा विभाग 1867 में बना, पुष्कर में 1866 में प्रथम कन्या विद्यालय खुला और महाराजा कॉलेज जयपुर की नींव 1844 में महाराजा रामसिंह द्वितीय के समय रखी गई थी।

प्रश्न 13: राजस्थान के प्रमुख समाचार पत्रों और उनके संपादकों के संदर्भ में विचार कीजिए...

सही उत्तर: D

व्याख्या: राजस्थान में पत्रकारिता ने जनजागरण में रीढ़ की हड्डी का काम किया। विजय सिंह पथिक ने 1920 में वर्धा से 'राजस्थान केसरी' निकाला। हरिभाऊ उपाध्याय ने अजमेर से 'त्याग भूमि' के माध्यम से गांधीवादी मूल्यों का प्रचार किया। जयनारायण व्यास द्वारा 1932 में ब्यावर से शुरू किया गया 'आगीबाण' राजस्थानी भाषा का पहला राजनीतिक अखबार था, जिसने ग्रामीण मारवाड़ में क्रांति का संदेश पहुँचाया। ये तीनों तथ्य पत्रकारिता के इतिहास के स्वर्णिम अध्याय हैं।

प्रश्न 14: कथन (A): 1849 ई. में भरतपुर से प्रकाशित 'मजहरुल सरूर' को राजस्थान का प्रथम समाचार पत्र माना जाता है।

सही उत्तर: A

व्याख्या: 'मजहरुल सरूर' (Mazharul Saroor) राजस्थान का पहला प्रकाशित समाचार पत्र है। यह भरतपुर रियासत के सरकारी संरक्षण में 1849 में हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में शुरू हुआ था। यद्यपि यह राजकीय समाचारों पर अधिक केंद्रित था, लेकिन इसने राजस्थान में मुद्रित पत्रकारिता की शुरुआत की और सूचनाओं के संगठित प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और कारण सही व्याख्या करता है।

प्रश्न 15: कथन: कानपुर से प्रकाशित 'प्रताप' समाचार पत्र ने बिजोलिया किसान आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।

सही उत्तर: C

व्याख्या: राजस्थान की रियासतों में कड़े प्रेस कानूनों के कारण स्थानीय समाचार पत्रों का प्रकाशन और वितरण कठिन था। ऐसे में कानपुर से प्रकाशित 'प्रताप' (संपादक: गणेश शंकर विद्यार्थी) ने बिजोलिया के किसानों की आवाज को पूरे भारत में पहुँचाया। इसी तरह 'राजस्थान केसरी' भी पहले वर्धा से प्रकाशित हुआ था। अतः यह स्पष्ट है कि बाहरी समाचार पत्रों ने रियासती सेंसरशिप को तोड़कर राजस्थान में जनजागरण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दोनों निष्कर्ष सत्य हैं।

प्रश्न 16: समाचार पत्रों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प असंगत है?

सही उत्तर: B

व्याख्या: विकल्प B असंगत है क्योंकि 'तरुण राजस्थान' का संपादन **ब्यावर** (अजमेर) से जयनारायण व्यास ने किया था, न कि सीधे जोधपुर से। प्रारंभ में यह अजमेर से राजस्थान सेवा संघ द्वारा निकाला गया था। अन्य विकल्प सही हैं: सज्जन कीर्ति सुधाकर (1876) उदयपुर का साप्ताहिक पत्र था, राजपूताना गजट (1885) मौलवी मुराद अली द्वारा अजमेर से निकाला गया और 'रियासती' सुमनेश जोशी का प्रसिद्ध पत्र था जिसने जोधपुर के पाकिस्तान में विलय के षड्यंत्र को उजागर किया था।

wincompete

प्रश्न 17: राजस्थान की महत्वपूर्ण संस्थाओं और उनके संस्थापकों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए...

सही उत्तर: D

व्याख्या: राजस्थान सेवा संघ (1919) ने किसान आंदोलनों को संगठित किया। गोविंद गिरी की 'संप सभा' (1883) ने भीलों में सामाजिक-धार्मिक चेतना जगाई। अर्जुन लाल सेठी की 'वर्धमान पाठशाला' (1907) क्रांतिकारियों को तैयार करने वाली एक नर्सरी की तरह थी, जहाँ से निकले देशभक्तों ने स्वतंत्रता संग्राम में आहुति दी। ये तीनों संस्थाएं राजस्थान के आधुनिक इतिहास की नींव हैं और इनके संस्थापक जन-जागृति के अग्रदूत रहे हैं।

प्रश्न 18: कथन (A): गोविंद गिरी द्वारा स्थापित 'संप सभा' ने भील समाज में 'बेगार' प्रथा का विरोध किया और नैतिक उत्थान पर बल दिया।

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन सत्य है लेकिन कारण असत्य है। गोविंद गिरी का मुख्य उद्देश्य भील समाज में व्याप्त कुरीतियों (शराब, चोरी आदि) को मिटाना और उन्हें शिक्षित करना था। उन्होंने कभी भी अलग 'भील राज्य' की मांग नहीं की थी, बल्कि वे ब्रिटिश और रियासती शासन के अंतर्गत ही सामाजिक अधिकारों की बात कर रहे थे। अंग्रेजों ने उनकी बढ़ती शक्ति और संगठन को गलत तरीके से 'विद्रोह' या 'पृथक राज्य' की साजिश मानकर मानगढ़ में नरसंहार किया था।

प्रश्न 19: कथन: राजस्थान सेवा संघ ने बिजोलिया और बेगूँ जैसे किसान आंदोलनों को संगठित नेतृत्व और वैचारिक आधार प्रदान किया।

सही उत्तर: D

व्याख्या: राजस्थान सेवा संघ (1919) राजस्थान के राजनीतिक इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण संस्था रही है। इसका प्राथमिक कार्य जागीरदारों के अत्याचारों की जांच करना और उन्हें उजागर करना था। इसने किसानों में निर्भीकता और संगठन की शक्ति पैदा की। हालांकि, 1928-29 के आसपास पथिक और रामनारायण चौधरी के बीच मतभेदों के कारण यह संस्था शिथिल हो गई। अतः दोनों निष्कर्ष ऐतिहासिक सत्यता की पुष्टि करते हैं।

प्रश्न 20: संस्थाओं और उनके स्थापना वर्ष के संदर्भ में कौन सा विकल्प असंगत है?

सही उत्तर: C

व्याख्या: विकल्प C असंगत है क्योंकि राजस्थान सेवा संघ की स्थापना वर्धा में **1919 ई.** में हुई थी, न कि 1920 ई. में। 1920 ई. में तो इसका मुख्यालय वर्धा से **अजमेर** स्थानांतरित किया गया था। अन्य विकल्प सही हैं: मारवाड़ हितकारिणी सभा का पुनर्गठन 1923 में जयनारायण व्यास द्वारा हुआ, परोपकारिणी सभा 1883 में उदयपुर में बनी और संप सभा की स्थापना 1883 में सिरोही में हुई थी।

प्रश्न: 21

सही उत्तर: D

व्याख्या: राजस्थान में ब्रिटिश नियंत्रण हेतु 1832 में अजमेर में राजपूताना एजेंसी बनाई गई। इसका मुखिया ए.जी.जी. कहलाता था। मिस्टर लोकेट राजस्थान के पहले ए.जी.जी. नियुक्त हुए। 1857 की क्रांति के समय जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस ए.जी.जी. थे, जो पूर्व में मेवाड़ के पॉलिटिकल एजेंट भी रह चुके थे।

प्रश्न: 22

सही उत्तर: A

व्याख्या: राजपूताना का ग्रीष्मकालीन मुख्यालय 1845 में माउंट आबू स्थानांतरित किया गया। इसका प्रमुख कारण अंग्रेजों का पर्वतीय जलवायु के प्रति लगाव और मैदानी इलाकों की गर्मी से बचना था। इसी कारण पैट्रिक लॉरेंस को नसीराबाद विद्रोह की सूचना माउंट आबू में ही मिली थी।

प्रश्न: 23

सही उत्तर: C

व्याख्या: 'लैप्स की नीति' के कारण रियासतों में असुरक्षा की भावना पैदा हुई। पॉलिटिकल एजेंटों का प्रभाव बढ़ने से राजाओं की संप्रभुता कम हो गई, जिससे भरतपुर, अलवर और करौली जैसी रियासतों में तीव्र असंतोष फैला, जो क्रांति का एक प्रमुख राजनैतिक आधार बना।

प्रश्न: 24

wincompete

सही उत्तर: C

व्याख्या: विकल्प C असंगत है क्योंकि देवली छावनी में 'कोटा कंटिंजेंट' की तैनाती थी। 'मेवाड़ भील कोर' (MBC) का मुख्यालय खेरवाड़ा (उदयपुर) में था। नसीराबाद, एरिनपुरा और ब्यावर के मेल सही हैं। खेरवाड़ा और ब्यावर छावनियों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया था।

प्रश्न: 25

सही उत्तर: D

व्याख्या: राजस्थान में क्रांति का सूत्रपात 28 मई को नसीराबाद से हुआ। यहाँ 15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री ने विद्रोह किया। क्रांतिकारियों ने स्पोटिसवुड और न्यूबेरी की हत्या की और छावनी को लूटने के बाद दिल्ली प्रस्थान किया, जहाँ वे 18 जून को पहुँचे थे।

प्रश्न: 26

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन सत्य है कि 40 अंग्रेजों को डूंगला से उदयपुर लाया गया। कारण भी स्वतंत्र रूप से सत्य है कि नीमच में विद्रोह का नेतृत्व मोहम्मद अली बेग और हीरा सिंह ने किया। किंतु, नेतृत्व वाली बात अंग्रेजों को सुरक्षित पहुँचाने की 'व्याख्या' नहीं करती (व्याख्या स्वरूप सिंह की निष्ठा थी)। (RAS Pre- आधारित)

प्रश्न: 27

सही उत्तर: A

व्याख्या: 21 अगस्त को एरिनपुरा के सैनिकों ने 'चलो दिल्ली, मारो फिरंगी' का नारा दिया। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि एरिनपुरा के सैनिकों ने नसीराबाद के सैनिकों के साथ नहीं, बल्कि आऊवा के ठाकुर कुशाल सिंह के नेतृत्व में अन्य सामंतों के साथ मिलकर अंग्रेजों से युद्ध किया था।

प्रश्न: 28

सही उत्तर: D

व्याख्या: कोटा में विद्रोह की तिथि 15 अक्टूबर, 1857 है, न कि 1858। अन्य विकल्प (नसीराबाद 28 मई, नीमच 3 जून और एरिनपुरा 21 अगस्त) ऐतिहासिक रूप से सही हैं। कोटा विद्रोह राजस्थान की सबसे सुनियोजित और प्रभावशाली जन-क्रांति थी।

प्रश्न: 29

सही उत्तर: B
व्याख्या: कथन 1 गलत है क्योंकि बिथौड़ा का युद्ध **8 सितम्बर**, 1857 को हुआ था, न कि 18 अगस्त को। अन्य दोनों कथन ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं।

प्रश्न: 30

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन सत्य है, लेकिन कारण असत्य है। होम्स ने सुगाली माता की प्रतिमा को नष्ट नहीं किया था, बल्कि वह उसे अपने साथ अजमेर ले गया था। सुगाली माता (10 सिर, 54 हाथ) क्रांतिकारियों की मुख्य प्रेरणास्रोत थीं।

प्रश्न: 31

सही उत्तर: A

व्याख्या: 1860 में कुशाल सिंह के आत्मसमर्पण के बाद टेलर कमीशन बनाया गया। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि पर्याप्त सबूत न होने के कारण टेलर कमीशन ने कुशाल सिंह को निर्दोष मानकर रिहा कर दिया था, न कि सजा सुनाई थी।

प्रश्न: 32

सही उत्तर: B

व्याख्या: विकल्प B असंगत है क्योंकि 'चेलावास के युद्ध' में पैट्रिक लॉरेंस की हार हुई थी और उसे मैदान छोड़कर भागना पड़ा था। इस युद्ध को 'काले और गोरे का युद्ध' भी कहा जाता है। बिथौड़ा और आऊवा घेराबंदी के तथ्य सही हैं।

प्रश्न: 33

सही उत्तर: A
व्याख्या: कथन 3 गलत है क्योंकि महाराव को

wincompete

लगभग **छह माह** (15 अक्टूबर 1857 से मार्च 1858) तक नजरबंद रखा गया था, न कि एक वर्ष।

प्रश्न: 34

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन और कारण दोनों सत्य हैं, लेकिन कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है। सलामी कम होने का कारण महाराव की संदिग्ध भूमिका और विद्रोह न रोक पाना था। करौली की सहायता एक अलग घटनाक्रम था **जिसके लिए मदनपाल को पुरस्कृत किया गया था।**

प्रश्न: 35

सही उत्तर: B

व्याख्या: कोटा में कोई ब्रिटिश छावनी नहीं थी, फिर भी वहां का विद्रोह सबसे प्रभावशाली रहा। निष्कर्ष 1 गलत है क्योंकि छावनी न होना विद्रोह का 'कारण' नहीं था, बल्कि विद्रोह वहां की जनता और राजकीय सेना के वैचारिक असंतोष का परिणाम था।

प्रश्न: 36

सही उत्तर: A

व्याख्या: कोटा में विद्रोह की शुरुआत **15 अक्टूबर**, 1857 को हुई थी। 15 अगस्त की तिथि गलत है। अन्य सभी तथ्य (जनरल रॉबर्ट्स द्वारा दमन और करौली की सहायता) सही हैं।

प्रश्न: 37

सही उत्तर: C
व्याख्या: कथन 1 गलत है क्योंकि कुवाड़ा के युद्ध (8 अगस्त 1858) में तात्या टोपे **पराजित** हुए थे, उन्होंने रॉबर्ट्स को नहीं हराया था। अन्य दोनों कथन सत्य हैं।

प्रश्न: 38

सही उत्तर: B

व्याख्या: विफलता का कारण केवल सेना बाहर भेजना नहीं, बल्कि समन्वय की कमी और राजाओं का पूर्ण असहयोग था। कारण अपने आप में सत्य है (जैसे बीकानेर महाराजा), लेकिन वह विफलता की एकमात्र या पूर्ण व्याख्या नहीं है।

प्रश्न: 39

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि उन्होंने अपनी संपत्ति रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे की सेना की मदद हेतु दी थी, न कि नाना साहब के लिए। उन्हें 'राजस्थान का मंगल पांडे' कहा जाता है।

प्रश्न: 40

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि झालावाड़ के महाराजा पृथ्वी सिंह ने तात्या टोपे को स्वेच्छा से राज्य नहीं दिया था, बल्कि तात्या टोपे ने बलपूर्वक झालावाड़ पर अधिकार कर महाराजा को बंदी बना लिया था। अन्य विकल्प (बीकानेर, टोंक, धौलपुर) सही हैं।

प्रश्न 41: 'राजपूताना मध्य भारत सभा' के संदर्भ में...

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन 3 गलत है। इसका मुख्यालय **अजमेर** में स्थापित किया गया था, न कि जयपुर में। राजपूताना मध्य भारत सभा राजस्थान की पहली प्रभावशाली राजनीतिक संस्था थी। इसकी स्थापना 29 दिसंबर, 1918 को दिल्ली के मारवाड़ी पुस्तकालय में हुई। इसके संस्थापकों में गणेश शंकर विद्यार्थी और विजय सिंह पथिक प्रमुख थे। सेठ जमनालाल बजाज इसके प्रथम अध्यक्ष बने। इसका प्रधान कार्यालय अजमेर में रखा गया था क्योंकि अजमेर ब्रिटिश नियंत्रण में होने के कारण राजनीतिक गतिविधियों का सुरक्षित केंद्र था। इस

wincompete

सभा ने रियासती जनता की समस्याओं को कांग्रेस के मंच तक पहुँचाने का ऐतिहासिक कार्य किया।

प्रश्न 42:

सही उत्तर: B

व्याख्या: स्थानांतरण का मुख्य कारण अजमेर का केंद्रीय राजनीतिक स्थल होना और ब्रिटिश नियंत्रण (चीफ कमिश्नर प्रांत) में होना था। संसाधनों की कमी प्राथमिक कारण नहीं था। राजस्थान सेवा संघ की स्थापना 1919 में वर्धा (महाराष्ट्र) में हुई थी। परंतु, राजस्थान की रियासतों में आंदोलन को प्रभावी नेतृत्व देने के लिए अजमेर अधिक उपयुक्त था। अजमेर उस समय 'चीफ कमिश्नर' के अधीन था, जहाँ रियासती राजाओं के कठोर कानून लागू नहीं होते थे। 1920 में मुख्यालय अजमेर आने के बाद संघ ने 'नवीन राजस्थान' और 'तरुण राजस्थान' जैसे पत्रों के माध्यम से बिजोलिया और बेगूँ आंदोलनों को संगठित किया।

प्रश्न 43: कथन: राजपूताना मध्य भारत सभा ने नागपुर अधिवेशन (1920) के समय कांग्रेस की सहयोगी संस्था के रूप में मान्यता प्राप्त की।

सही उत्तर: A

व्याख्या: इस संस्था के माध्यम से पहली बार राजस्थान की रियासतों के किसानों और आम जनता के दुखों को राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के नेताओं के सामने रखा गया। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि उत्तरदायी शासन की स्थापना एक लंबी संघर्षपूर्ण प्रक्रिया थी, जो 1921 तक सफल नहीं हुई थी। प्रजामंडल आंदोलनों का वास्तविक उभार 1938 के बाद आया। अतः केवल निष्कर्ष 1 ही तार्किक है जो इस संस्था के वास्तविक राजनीतिक प्रभाव को स्पष्ट करता है।

प्रश्न 44: राजस्थान के प्रारंभिक राजनीतिक संगठनों के संदर्भ में कौन सा विकल्प असंगत है?

सही उत्तर: B

व्याख्या: विकल्प B गलत है क्योंकि राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद का प्रथम अधिवेशन **अजमेर** में हुआ था, जयपुर में नहीं।

राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद का प्रथम अधिवेशन 1931 में अजमेर में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता चाँदकरण शारदा ने की थी। अन्य विकल्प सही हैं: राजपूताना मध्य भारत सभा 1918 दिल्ली में, राजस्थान सेवा संघ 1919 वर्धा में और अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद (AISPC) की स्थापना 1927 में बम्बई में हुई थी, जिसके प्रथम अध्यक्ष रामचंद्र राव थे।

प्रश्न 45: राजस्थान की राजनीतिक पत्रकारिता के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए...

सही उत्तर: A
व्याख्या: कथन 2 गलत है। 'नवीन राजस्थान' का प्रकाशन **अजमेर** से किया गया था, बूँदी से नहीं। 'आगीबाण' का संपादन जय नारायण व्यास ने ब्यावर से किया।

विजय सिंह पथिक ने 1920 में वर्धा से 'राजस्थान केसरी' निकाला ताकि रियासती अत्याचारों को राष्ट्रीय पहचान मिले। 'नवीन राजस्थान' (1922) ने अजमेर से बेगूँ और भील आंदोलनों को नेतृत्व दिया। जयनारायण व्यास ने 1932 में ब्यावर से 'आगीबाण' का संपादन कर राजस्थानी भाषा में प्रथम राजनीतिक प्रहार किया। इन तीनों समाचार पत्रों ने राजस्थान में प्रेस को एक शक्तिशाली राजनीतिक औजार के रूप में स्थापित किया।

प्रश्न 46: कथन (A): विजय सिंह पथिक ने 'नवीन राजस्थान' समाचार पत्र का नाम बदलकर 'तरुण राजस्थान' कर दिया था।

सही उत्तर: B

व्याख्या: नाम बदलने का कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा 'नवीन राजस्थान' पर प्रतिबंध लगाना था, न कि आपसी मतभेद। यद्यपि मतभेद बाद में हुए, लेकिन नाम परिवर्तन का कारण सेंसरशिप थी।

'नवीन राजस्थान' की प्रखर और विद्रोही भाषा के कारण ब्रिटिश सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया था। इससे बचने के लिए पथिक जी ने उसी प्रेस और उसी वैचारिक आधार के साथ पत्र का नाम बदलकर 'तरुण राजस्थान' (1923) कर दिया। यह प्रेस सेंसरशिप को चकमा देने की एक सफल रणनीति थी। इस पत्र ने बाद में नीमूचणा हत्याकांड जैसी बड़ी खबरों का खुलासा किया था।

wincompete

प्रश्न 47: कथन: जयनारायण व्यास ने ग्रामीण जनता तक राजनीतिक संदेश पहुँचाने के लिए मातृभाषा में 'आगीबाण' का संपादन किया।

सही उत्तर: A

व्याख्या: व्यास जी ने अनुभव किया कि हिंदी और अंग्रेजी के पत्र ग्रामीण किसानों तक प्रभावी ढंग से नहीं पहुँच पा रहे थे। अतः उन्होंने 'आगीबाण' के लिए लोक-मुहावरों और राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि सरकार ने नीतियों को वापस लेने के बजाय दमन और बढ़ा दिया था और व्यास जी को निष्कासित भी किया गया था। अतः केवल निष्कर्ष 1 ही ऐतिहासिक रूप से सत्य है।

प्रश्न 48: समाचार पत्रों और उनके संपादकों के संदर्भ में कौन सा विकल्प असंगत है?

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि 'प्रताप' समाचार पत्र के संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी थे, न कि विजय सिंह पथिक। यद्यपि पथिक जी के आग्रह पर 'प्रताप' ने बिजोलिया आंदोलन को बहुत सहयोग दिया था। अन्य विकल्प सही हैं: 'त्याग भूमि' हरिभाऊ उपाध्याय का था, 'तरुण राजस्थान' से जयनारायण व्यास जुड़े थे और 'राजस्थान केसरी' में रामनारायण चौधरी सह-संपादक के रूप में कार्यरत थे।

प्रश्न 49: केसरी सिंह बारहट और उनकी रचना 'चेतावनी रा चूंगट्या' के संदर्भ में...

सही उत्तर: B
व्याख्या: कथन 2 गलत है। 'चेतावनी रा चूंगट्या' के 13 सोरठे **डिंगल** भाषा में लिखे गए थे, न कि शुद्ध मेवाड़ी में।

1903 में लॉर्ड कर्जन के दिल्ली दरबार में मेवाड़ महाराणा फतेह सिंह शामिल होने जा रहे थे। केसरी सिंह बारहट ने महाराणा के वंशानुगत स्वाभिमान को जगाने के लिए डिंगल भाषा में 13 सोरठे (चेतावनी रा चूंगट्या) लिखे। इन्हें पढ़कर महाराणा इतने प्रभावित हुए कि वे दिल्ली पहुँचने के बाद भी दरबार में शामिल नहीं हुए। बारहट परिवार राजस्थान का एकमात्र परिवार है जिसने अपना सर्वस्व (प्रताप सिंह और जोरावर सिंह सहित) देश के लिए समर्पित किया।

प्रश्न 50: कथन (A): सूर्यमल्ल मीसण को आधुनिक राजस्थान में राष्ट्रीय चेतना का प्रथम कवि स्वीकार किया जाता है।

सही उत्तर: B

व्याख्या: सूर्यमल्ल मीसण **बूँदी** के महाराव रामसिंह के दरबारी कवि थे, बीकानेर के नहीं। कथन (A) सत्य है क्योंकि 'वीर सतसई' और 'वंश भास्कर' के माध्यम से उन्होंने जागृति पैदा की।

बूंदी के दरबारी कवि सूर्यमल्ल मीसण ने 1857 की क्रांति के समय अपनी कविताओं और पत्रों के माध्यम से राजस्थान के राजाओं को उनकी निष्क्रियता के लिए धिक्कारा और मातृभूमि की रक्षा का आह्वान किया। उनकी रचना 'वीर सतसई' राजस्थान के शौर्य का प्रतीक है। उन्होंने 'वंश भास्कर' में भी अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति का वर्णन किया है।

प्रश्न 51: कथन: राजस्थानी साहित्य ने 20वीं सदी में 'राज-प्रशस्ति' के स्थान पर 'लोक-जागृति' का मार्ग अपनाया।

सही उत्तर: A

व्याख्या: आधुनिक कवियों ने डिंगल और पिंगल का उपयोग राजाओं की झूठी प्रशंसा के बजाय राष्ट्रीय गौरव और जनता के संघर्ष को स्वर देने के लिए किया। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि स्वाधीनता केवल साहित्य से नहीं, बल्कि लंबे संगठित राजनीतिक आंदोलनों (प्रजामंडल आदि) के बाद प्राप्त हुई थी। साहित्य ने उस संघर्ष के लिए ऊर्जा और वैचारिक आधार प्रदान किया था। अतः केवल निष्कर्ष 1 सत्य है।

प्रश्न 52: साहित्यकारों और उनकी कृतियों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प असंगत है?

सही उत्तर: D

wincompete

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि 'प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः' गीत हीरालाल शास्त्री द्वारा लिखा गया था, न कि केसरी सिंह बारहट द्वारा। अन्य विकल्प सही हैं: सागर मल गोपा की 'जैसलमेर का गुंडाराज' अत्यंत चर्चित रही, अर्जुन लाल सेठी ने 'स्त्री मुक्ति' और 'शूद्र मुक्ति' जैसे नाटकों की रचना

की और जयनारायण व्यास ने 'पोपां बाई री पोल' के माध्यम से मारवाड़ के कुशासन की पोल खोली थी।

प्रश्न 53: राजस्थान में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए...

सही उत्तर: B
व्याख्या: कथन 2 गलत है। नारायणी देवी वर्मा का संबंध **मेवाड़ प्रजामंडल** से था और उन्होंने उदयपुर/मेवाड़ क्षेत्र में जेल यात्रा की थी, जोधपुर में नहीं।

राजस्थान में महिलाओं की भूमिका अत्यंत साहसी रही है। अंजना देवी चौधरी 1924 में जेल जाने वाली पहली महिला बनीं। नारायणी देवी वर्मा ने 1942 में अपने छोटे पुत्र के साथ जेल जाकर मेवाड़ प्रजामंडल को शक्ति दी। किशोरी देवी ने शेखावाटी में जागीरदारों के दुर्व्यवहार के विरुद्ध 10,000 महिलाओं को संगठित कर कटराथल सम्मेलन किया। ये तीनों घटनाएं राजस्थान की नारी शक्ति के जनजागरण के प्रमुख स्तंभ हैं।

प्रश्न 54: कथन (A): भील बालिका काली बाई को राजस्थान की महान शहीद और शिक्षा के प्रति समर्पण का प्रतीक माना जाता है।

सही उत्तर: B

व्याख्या: कारण असत्य है क्योंकि काली बाई अपने पिता को नहीं, बल्कि अपने **अध्यापक सेंगा भाई** को बचाने के लिए शहीद हुई थीं। कथन (A) सत्य है।

19 जून, 1947 को डूंगरपुर रियासत के रास्तापाल में पुलिस जब अध्यापक सेंगा भाई को घसीटकर ले जा रही थी, तब 13 वर्षीय भील बालिका काली बाई ने अपनी हँसिये से रस्सी काटकर उन्हें मुक्त कराया। इस साहस के बदले पुलिस ने उन पर गोलियां चला दीं और वे शहीद हो गईं। यह घटना जनजातीय जागृति और शिक्षा के अधिकार के संघर्ष का प्रतीक है।

प्रश्न 55: कथन: 1934 में कटराथल (सीकर) में आयोजित विशाल महिला सम्मेलन ने जागीरदारों को विवश किया।

सही उत्तर: A

व्याख्या: कटराथल सम्मेलन ने सिद्ध किया कि राजस्थान की ग्रामीण और किसान महिलाएं भी अपने आत्मसम्मान के लिए हजारों की संख्या में संगठित हो सकती हैं। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि पर्दा प्रथा एक सामाजिक बुराई थी जो केवल एक सम्मेलन से समाप्त नहीं हुई, इसके लिए लंबा सुधार आंदोलन चला। अतः केवल निष्कर्ष 1 ही तार्किक है जो उस समय के ग्रामीण जनजागरण के स्वरूप को स्पष्ट करता है।

प्रश्न 56: महिला स्वतंत्रता सेनानियों और उनके कार्यक्षेत्र के संदर्भ में कौन सा विकल्प असंगत है?

सही उत्तर: D

व्याख्या: रमा देवी का संबंध मुख्य रूप से **बिजोलिया किसान आंदोलन** और मेवाड़ से रहा है, उन्हें मारवाड़ प्रजामंडल की प्रमुख महिला नेता मानना असंगत है।

रमा देवी का संबंध मुख्य रूप से बिजोलिया किसान आंदोलन से था, जहाँ उन्होंने पुलिस दमन का बहादुरी से सामना किया था। अन्य विकल्प सही हैं: रतन शास्त्री ने वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना की, शांता त्रिवेदी ने उदयपुर में महिला परिषद बनाई और सत्यभामा (ब्यावर/अजमेर) को गांधी जी की मानस पुत्री के रूप में जाना जाता है।

प्रश्न 57: 1938 के कांग्रेस के 'हरिपुरा अधिवेशन' के प्रभाव के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए...

सही उत्तर: C
व्याख्या: कथन 2 गलत है। कांग्रेस ने आंदोलनों को **नैतिक समर्थन** दिया था, लेकिन उन्हें अपनी 'प्रत्यक्ष जिम्मेदारी' नहीं बनाया था; उत्तरदायित्व रियासती जनता पर ही छोड़ा गया था।

सुभाष चंद्र बोस की अध्यक्षता वाले हरिपुरा अधिवेशन ने घोषणा की कि रियासतों की जनता का संघर्ष उनका अपना है, लेकिन कांग्रेस का उन्हें नैतिक समर्थन प्राप्त है। इस 'ग्रीन सिग्नल' के बाद ही राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलनों में बाढ़ आ गई और कार्यकर्ताओं का भय समाप्त हो गया। 1938 में ही मेवाड़, जयपुर, अलवर और शाहपुरा जैसे महत्वपूर्ण प्रजामंडलों का गठन/पुनर्गठन हुआ।

wincompete

प्रश्न 58: कथन (A): अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद (AISPC) के 1945 के उदयपुर अधिवेशन की अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरू ने की थी।

सही उत्तर: B

व्याख्या: नेहरू जी की अध्यक्षता का कारण अखिल भारतीय स्तर पर रियासती संघर्ष को कांग्रेस के नेतृत्व में लाना था, न कि केवल उदयपुर का बड़ा केंद्र होना।

1938 के हरिपुरा अधिवेशन के बाद कांग्रेस ने अपनी पुरानी 'अहस्तक्षेप' की नीति को त्याग दिया था और रियासतों के मामलों में सक्रिय रुचि लेना शुरू कर दिया था। 1945 का उदयपुर अधिवेशन इस बात का प्रमाण था कि अब राष्ट्रीय नेतृत्व सीधे तौर पर राजस्थान के प्रजामंडल आंदोलनों को दिशा दे रहा था। नेहरू जी का अध्यक्ष बनना रियासती जनता के लिए अजेय शक्ति का स्रोत था। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और व्याख्या सही है।

प्रश्न 59: कथन: राजस्थान के नेतृत्व ने अनुभव किया कि किसानों की समस्याओं का स्थाई समाधान 'उत्तरदायी शासन' में निहित है।

सही उत्तर: A

व्याख्या: 1920 के दशक के किसान आंदोलन (बिजोलिया आदि) मुख्य रूप से आर्थिक मांगों तक सीमित थे। लेकिन नेतृत्व ने समझा कि जब तक शासन जनता के हाथ में नहीं होगा, तब तक जागीरदारी शोषण बंद नहीं होगा। इसी वैचारिक परिवर्तन ने प्रजामंडल आंदोलनों (Political Movements) को जन्म दिया। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि प्रजामंडलों का मुख्य लक्ष्य रियासतों के भीतर 'उत्तरदायी शासन' स्थापित करना था। अतः केवल निष्कर्ष 1 सत्य है।

प्रश्न 60: प्रजामंडल आंदोलन के महत्वपूर्ण पड़ावों के संदर्भ में कौन सा विकल्प असंगत है?

सही उत्तर: C

व्याख्या: नेहरू जी पहली बार **1939** में लुधियाना अधिवेशन में AISPC के अध्यक्ष बने थे। 1945 में उन्होंने उदयपुर अधिवेशन की अध्यक्षता की थी। कांग्रेस का ऐतिहासिक हरिपुरा अधिवेशन 1938 ई. में हुआ था, न कि 1939 ई. में। 1939 ई. में तो जवाहरलाल नेहरू 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद' के अध्यक्ष बने थे। अन्य विकल्प (AISPC की स्थापना 1927 और राजपूताना परिषद का प्रथम अधिवेशन 1931) ऐतिहासिक रूप से सही हैं। हरिपुरा अधिवेशन ही प्रजामंडल आंदोलनों का वास्तविक प्रेरणास्रोत था।

प्रश्न: 61

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन 3 गलत है। बिजोलिया आंदोलन अपनी शुरुआत से अंत (44 वर्षों) तक पूर्णतः **अहिंसक** रहा। बिजोलिया किसान आंदोलन (1897-1941) तीन प्रमुख चरणों में चला। प्रथम चरण में साधु सीताराम दास ने नेतृत्व किया। द्वितीय चरण में विजय सिंह पथिक ने 1916 में प्रवेश किया और 'ऊपरमाल पंच बोर्ड' बनाया। तृतीय चरण (1923-1941) में माणिक्य लाल वर्मा और जमनालाल बजाज सक्रिय रहे। यह भारत का सबसे संगठित और अहिंसक आंदोलन था, जो 44 वर्षों तक अनवरत चला और किसानों की जीत के साथ समाप्त हुआ।

प्रश्न: 62

सही उत्तर: B

व्याख्या: कारण असत्य है क्योंकि 'प्रताप' का प्रकाशन **कानपुर** से होता था (संपादक: गणेश शंकर विद्यार्थी), न कि अजमेर से।

विजय सिंह पथिक ने बिजोलिया के किसानों की पीड़ा को राष्ट्रीय मंच देने के लिए कानपुर के 'प्रताप' समाचार पत्र का सहारा लिया। इसके संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी ने पथिक जी के भेजे समाचारों को प्रमुखता से छापा, जिससे गांधी जी और तिलक जैसे बड़े नेताओं का ध्यान राजस्थान की ओर गया। गांधी जी ने जाँच हेतु अपने सचिव महादेव देसाई को भी भेजा था।

प्रश्न: 63

सही उत्तर: A

wincompete

व्याख्या: निष्कर्ष 2 गलत है। 1941 के समझौते के समय मेवाड़ के प्रधानमंत्री **टी. विजयराघवाचार्य** थे। सर मिर्जा इस्माइल जयपुर के प्रधानमंत्री थे।

बिजोलिया आंदोलन की सबसे बड़ी विशेषता इसकी अहिंसा थी। 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री टी. विजयराघवाचार्य के प्रयासों से अंतिम समझौता हुआ, जिसमें किसानों की मांगें मान ली गईं। इस आंदोलन ने न केवल मेवाड़ बल्कि राजस्थान की अन्य रियासतों (बेगूँ, अलवर, बूंदी) के किसानों के लिए प्रेरणा का काम किया।

प्रश्न: 64

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि 'ऊपरमाल पंच बोर्ड' (1917) के प्रथम सरपंच मन्ना पटेल बनाए गए थे, न कि साधु सीताराम दास। साधु सीताराम दास इसके प्रेरक और संस्थापक सदस्य थे। कृष्ण सिंह द्वारा चंवरी कर और पृथ्वी सिंह द्वारा तलवार बंधाई कर लगाना आंदोलन के प्रमुख तात्कालिक कारण थे। 1919 में बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग प्रथम सरकारी जाँच आयोग था।

प्रश्न: 65

सही उत्तर: C

व्याख्या: बोल्शेविक समझौता ठाकुर अनूप सिंह और राजस्थान सेवा संघ के बीच हुआ।
श्रीगणेश 1923 में मेनाल से हुआ।
बेगूँ आंदोलन 1921 में मेनाल से शुरू हुआ। रामनारायण चौधरी ने इसका नेतृत्व किया। ठाकुर अनूप सिंह और राजस्थान सेवा संघ के बीच 1922 में एक समझौता हुआ, जिसे सरकार ने 'बोल्शेविक' (साम्यवादी) मानकर रद्द कर दिया। यह समझौता किसानों की बड़ी जीत थी लेकिन ब्रिटिश और मेवाड़ सरकार ने इसे स्वीकार नहीं किया।

प्रश्न: 66

सही उत्तर: B

व्याख्या: कारण असत्य है। बेगूँ आंदोलन पूर्णतः अहिंसक था; 'बोल्शेविक' शब्द का प्रयोग केवल दमनकारी सरकार द्वारा डराने हेतु किया गया था, वास्तविक रूसी प्रभाव या हथियारों का प्रयोग नहीं था।

'बोल्शेविक' शब्द का प्रयोग रूसी क्रांति (1917) के संदर्भ में किया जाता था। अंग्रेज अधिकारी किसानों के संगठित होकर ठाकुर से समझौता करने को साम्यवाद का प्रसार मानते थे, जो उनके साम्राज्य के लिए खतरा था। इसी डर से उन्होंने अनूप सिंह को नजरबंद कर समझौते को अवैध करार दिया।

प्रश्न: 67

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 2 गलत है। नानक जी भील अकेले झंडा गीत गा रहे थे जब उन पर गोली चलाई गई; माणिक्य लाल वर्मा वहां मौजूद नहीं थे, उन्होंने उनकी शहादत पर 'अर्ज़ी' गीत बाद में लिखा था।

2 अप्रैल, 1923 को डाबी (बूंदी) में किसानों की सभा पर पुलिस ने गोलियां चलाईं, जिसमें नानक जी भील झंडा गीत गाते हुए शहीद हुए। माणिक्य लाल वर्मा ने उनकी शहादत पर 'अर्ज़ी' नामक प्रसिद्ध गीत लिखा, जो आगे चलकर किसान आंदोलनों का प्रेरणा गीत बना।

प्रश्न: 68

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि इकराम हुसैन पुलिस अधीक्षक बूंदी (बरड़) आंदोलन के दौरान डाबी हत्याकांड से संबंधित था, न कि बेगूँ से। बेगूँ में दमनकारी अधिकारी मिस्टर ट्रेंच था, जिसने गोविंदपुरा में गोलीबारी करवाई थी। रूपाजी और कृपाजी धाकड़ बेगूँ (गोविंदपुरा) में शहीद हुए थे। नयनूराम शर्मा ने बूंदी आंदोलन का नेतृत्व किया था।

wincompete

प्रश्न: 69

सही उत्तर: A
व्याख्या: कथन 3 गलत है। गांधी जी ने नीमूचणा कांड को जलियांवाला बाग से **अधिक** वीभत्स (दोहरा डायरवाद) बताया था।

अलवर में सूअरों द्वारा फसल बर्बादी एक बड़ा मुद्दा था। 14 मई, 1925 को बानसूर के नीमूचणा गाँव में हुई सभा पर कमांडर छाजू सिंह ने मशीनगनों से

अंधाधुंध गोलियां चलवाईं, जिसमें सैकड़ों किसान मारे गए। छाजू सिंह की क्रूरता के कारण उसे 'राजस्थान का जनरल डायर' कहा जाता है।

प्रश्न: 70

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन सत्य है लेकिन कारण असत्य है। गांधी जी ने नीमूचणा कांड को उसकी क्रूरता के आधार पर 'डायरवाद का दोहरा संस्करण' कहा था। ऐतिहासिक रूप से जलियांवाला बाग हत्याकांड में मरने वालों की संख्या नीमूचणा से अधिक थी, लेकिन नीमूचणा की वीभत्सता और घर जलाने की घटना को गांधी जी ने बहुत गंभीर माना था।

प्रश्न: 71

सही उत्तर:A केवल निष्कर्ष 1 निकलता है।

व्याख्या: निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि यह मुख्य रूप से **जाट** किसानों का आंदोलन था।

शेखावाटी जाट आंदोलन की गूँज सात समंदर पार तक गई थी। कुडन हत्याकांड (सीकर) की चर्चा ब्रिटिश संसद में होना किसानों की संगठित शक्ति का प्रमाण है। जयसिंहपुरा कांड (1934) पहला मामला था जहाँ सामंती निरंकुशता पर कानून की जीत हुई और किसी जागीरदार को सजा मिली।
प्रश्न: 72

सही उत्तर: D

व्याख्या: ट्रेंच कमीशन का संबंध **बेगूँ** आंदोलन से था, न कि नीमूचणा (अलवर) से।

नीमूचणा कांड (अलवर) की जाँच हेतु आयोग का नाम ट्रेंच कमीशन नहीं था। ट्रेंच कमीशन का संबंध बेगूँ किसान आंदोलन की जाँच से था। नीमूचणा कांड की जाँच हेतु महाराजा अलवर ने एक समिति गठित की थी। अन्य विकल्प (कटराथल 1934, जाट महासभा 1931, लगान वृद्धि 1924) हैं।

प्रश्न: 73

सही उत्तर: C
व्याख्या: कथन 3 गलत है। मानगढ़ पहाड़ी वर्तमान **बांसवाड़ा** जिले में स्थित है, डूंगरपुर में नहीं

गोविंद गिरी ने 1883 में संप सभा बनाई, जिसके माध्यम से भीलों को शराब, चोरी और कुप्रथाओं से दूर किया। मानगढ़ पहाड़ी पर 17 नवंबर, 1913 को संप सभा का अधिवेशन चल रहा था, जहाँ अंग्रेजों ने नरसंहार किया। इसमें 1500 भील शहीद हुए। यह जनजातीय चेतना का सबसे बड़ा केंद्र था।
प्रश्न: 74

सही उत्तर: B

व्याख्या: कारण असत्य है। भील शांतिपूर्वक सभा कर रहे थे, उन्होंने कोई सैन्य कार्रवाई नहीं की थी; अंग्रेज सेना ने उन पर एकतरफा गोलीबारी की थी।

कथन सत्य है लेकिन कारण असत्य है। मानगढ़ हत्याकांड को राजस्थान का प्रथम जलियांवाला बाग कहा जाता है। हालांकि, गोविंद गिरी का उद्देश्य कभी भी स्वतंत्र 'भील राज्य' बनाना नहीं था, बल्कि वे समाज सुधारक थे। अंग्रेजों और रियासती राजाओं ने उनके संगठन से डरकर इसे 'भील राज्य' बनाने की साजिश का नाम दिया था।

प्रश्न: 75

सही उत्तर: B

व्याख्या: निष्कर्ष 1 गलत है क्योंकि भगत आंदोलन धार्मिक सुधारों के साथ-साथ 'बेगार' और 'करों' के विरोध के कारण गहराई से राजनीतिक भी था। निष्कर्ष 2 बिल्कुल सही है क्योंकि मानगढ़ के बलिदान के बाद भील समाज ने अपनी गरिमा और अधिकारों के लिए लड़ना शुरू किया, जिससे भविष्य के आंदोलनों की नींव पड़ी।

प्रश्न: 76

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि मानगढ़ पहाड़ी बांसवाड़ा रियासत (वर्तमान में बांसवाड़ा-गुजरात सीमा) में स्थित थी, न कि डूंगरपुर रियासत में। गोविंद गिरी का जन्म डूंगरपुर के बांसिया गाँव में हुआ था और उनका अंतिम समय गुजरात के कम्बोई में बीता। पुँजा धीरजी उनके महत्वपूर्ण भील सहयोगी थे।

प्रश्न: 77

wincompete

सही उत्तर: A
व्याख्या: कथन 2 गलत है। नीमड़ा हत्याकांड **7 मार्च, 1922** को हुआ था, न कि 1925 में।

एकी आंदोलन 1921 में मातृकुण्डिया से शुरू हुआ। तेजावत ने 21 सूत्री मांग पत्र 'मेवाड़ की पुकार' तैयार किया। 7 मार्च, 1922 को नीमड़ा (विजयनगर रियासत) में सेना ने भीषण गोलीबारी की जिसमें 1200 भील शहीद हुए। इसे मानगढ़ के बाद दूसरा बड़ा जनजातीय नरसंहार माना जाता है।

प्रश्न: 78

सही उत्तर: B

व्याख्या: कारण असत्य है। तेजावत जी **ओसवाल (जैन)** परिवार से थे, वे भील जनजाति के नहीं थे; उन्होंने जनजातियों के उत्थान के लिए कार्य किया था।

मोतीलाल तेजावत झाड़ोल ठिकाने के कामदार थे। उन्होंने आदिवासियों पर अत्याचार देखकर नौकरी छोड़ी और उनके हक की लड़ाई लड़ी। भील उन्हें 'बावजी' और अपना 'मसीहा' मानते थे। उन्होंने भीलों को संगठित कर उनमें एकता (एकी) का संचार किया।

प्रश्न: 79

सही उत्तर: A

व्याख्या: "न हाकिम, न हुकुम" का नारा देकर तेजावत ने सामंती और ब्रिटिश सत्ता की वैधता को चुनौती दी। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि नीमड़ा कांड के बाद तेजावत वर्षों तक अज्ञातवास में रहे थे, उन्होंने 1929 में ईडर में गांधी जी के दूत के परामर्श पर आत्मसमर्पण किया था। अतः केवल निष्कर्ष 1 सत्य है।

प्रश्न: 80

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि तेजावत को 1936 में रिहा करते समय यह शर्त रखी गई थी कि वे बिना अनुमति मेवाड़ से बाहर नहीं जाएंगे, न कि सक्रिय राजनीति छोड़ने की। मातृकुण्डिया को मेवाड़ का हरिद्वार कहा जाता है और मणिलाल कोठारी ने तेजावत के आत्मसमर्पण में मध्यस्थता की थी।

प्रश्न: 81

सही उत्तर: B
व्याख्या: कथन 2 गलत है। मेवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष **बलवंत सिंह मेहता** थे। वर्मा जी महामंत्री थे।

जयपुर और मेवाड़ प्रजामंडल राजस्थान के जनजागरण के मुख्य केंद्र थे। जयपुर प्रजामंडल का पुनर्गठन 1936 में जमनालाल बजाज और हीरालाल शास्त्री द्वारा किया गया। मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना 24 अप्रैल, 1938 को बलवंत सिंह मेहता के घर हुई, जहाँ माणिक्य लाल वर्मा ने महामंत्री की भूमिका निभाई। वर्मा जी को मेवाड़ से निष्कासित किए जाने पर उन्होंने अजमेर को अपना कार्यस्थल बनाकर आंदोलन को जीवित रखा।

प्रश्न: 82

सही उत्तर: B

व्याख्या: समझौता 'जेंटलमैन एग्रीमेंट' के नाम से प्रसिद्ध था और इसके नियम ज्ञात थे। यह 'व्याख्या' नहीं है कि क्यों अलग रहे (कारण रियासत में सुधारों का आश्वासन था)। (RPSC Grade-I)

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जयपुर प्रजामंडल और सरकार के बीच 'जेंटलमैन एग्रीमेंट' हुआ। हीरालाल शास्त्री और प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल के बीच हुए इस समझौते की मुख्य शर्त यह थी कि प्रजामंडल रियासत में सक्रिय विद्रोह नहीं करेगा और सरकार उत्तरदायी शासन की दिशा में सुधार करेगी। इसी समझौते के विरोध में 'आजाद मोर्चा' का गठन हुआ था। ।

प्रश्न: 83

सही उत्तर: A

व्याख्या: मेवाड़ प्रजामंडल का प्रथम अधिवेशन 1941 में माणिक्य लाल वर्मा की अध्यक्षता में हुआ। आचार्य कृपलानी और विजयलक्ष्मी पंडित का आगमन यह सिद्ध करता था कि राजस्थान का आंदोलन राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व से जुड़ गया है। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि महाराणा ने तुरंत सभी मांगें नहीं मानी थीं, बल्कि संघर्ष इसके बाद भी जारी रहा और 1942 के आंदोलन में प्रजामंडल को पुनः दमन का सामना करना पड़ा था।

wincompete

प्रश्न: 84

सही उत्तर: A

व्याख्या: आजाद मोर्चा का गठन **बाबा हरिश्चंद्र** ने किया था, जयनारायण व्यास का संबंध मारवाड़ से था।

मेवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष **बलवंत सिंह मेहता** थे, जबकि माणिक्य लाल वर्मा इसके मुख्य सूत्रधार और महामंत्री थे। आजाद मोर्चा का गठन बाबा हरिश्चंद्र ने जेंटलमैन एग्रीमेंट के विरोध में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने हेतु किया था। जयपुर प्रजामंडल की प्रथम स्थापना 1931 में कपूर चंद पाटनी ने की थी। सर मिर्जा इस्माइल जयपुर के प्रधानमंत्री थे।

प्रश्न: 85

सही उत्तर: A

व्याख्या: जयनारायण व्यास ने मारवाड़ में कुशासन के विरुद्ध प्रखर पत्रकारिता की। बालमुकुंद बिस्सा (राजस्थान का जतिन दास) की शहादत 1942 में जोधपुर जेल में हुई। कथन 3 गलत है क्योंकि बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना 1936 में रियासत के भीतर नहीं, बल्कि दमनकारी नीतियों के कारण **कलकत्ता (कोलकाता)** में की गई थी। अतः केवल 1 और 2 सत्य हैं।

प्रश्न: 86

सही उत्तर: B

व्याख्या: कारण असत्य है। महाराजा गंगा सिंह ने तो दमनकारी नीतियां अपनाई थीं, इसी कारण प्रजामंडल को राज्य से बाहर कलकत्ता में स्थापित करना पड़ा।

बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह के शासन में राजनीतिक गतिविधियों पर कठोर पाबंदी थी। 'सार्वजनिक सुरक्षा कानून' के चलते वहां प्रजामंडल का गठन संभव नहीं था, इसलिए मघाराम वैद्य ने 4 अक्टूबर, 1936 को कलकत्ता में बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना की। यह राजस्थान का ऐसा प्रजामंडल था जिसकी स्थापना रियासत की सीमाओं से बहुत दूर हुई।

प्रश्न: 87

सही उत्तर: A

व्याख्या: कोटा में 1942 का आंदोलन अभूतपूर्व था, जहाँ जनता ने कोतवाली पर तिरंगा फहराया और 3 दिनों तक शहर का नियंत्रण अपने हाथ में रखा। पंडित नयनूराम शर्मा की हत्या के बाद अभिन्न हरि ने नेतृत्व संभाला। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि कोटा प्रजामंडल का प्राथमिक उद्देश्य उत्तरदायी शासन और राजनीतिक अधिकार प्राप्त करना था, न कि केवल शैक्षणिक सुधार। अतः केवल निष्कर्ष 1 सत्य है।

प्रश्न: 88

सही उत्तर: A

व्याख्या: मारवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष **भंवरलाल सर्राफ** थे। व्यास जी मुख्य संचालक थे।

मारवाड़ प्रजामंडल (1934) के प्रथम अध्यक्ष **भंवरलाल सर्राफ** थे, जबकि जयनारायण व्यास इसके वास्तविक नेतृत्वकर्ता थे। बालमुकुंद बिस्सा को राजस्थान का जतिन दास कहा जाता है। बीकानेर षड्यंत्र केस में स्वामी गोपाल दास और सत्यनारायण सर्राफ को सजा हुई थी। हाड़ौती प्रजामंडल की स्थापना पंडित नयनूराम शर्मा ने 1934 में की थी।

प्रश्न: 89

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 2 गलत है। जैसलमेर प्रजामंडल की स्थापना **जोधपुर** में हुई थी, बीकानेर में नहीं।

जैसलमेर में सागर मल गोपा का बलिदान राजस्थान के इतिहास की वीभत्स घटना है। उन्होंने 'जैसलमेर का गुंडाराज' पुस्तक लिखी थी। जैसलमेर प्रजामंडल की स्थापना मीठा लाल व्यास ने 1945 में जोधपुर में की। अलवर में हरिनारायण शर्मा ने सामाजिक सुधारों (अस्पृश्यता निवारण) के माध्यम से प्रजामंडल के लिए मजबूत जनाधार तैयार किया।

प्रश्न: 90

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन सत्य है लेकिन कारण असत्य है। भरतपुर प्रजामंडल की स्थापना 1938 में रेवाड़ी में

इसलिए की गई क्योंकि भरतपुर रियासत में इस पर प्रतिबंध था। महाराजा प्रजामंडल के प्रति सकारात्मक नहीं बल्कि दमनकारी रुख रखते थे। इसी कारण कार्यकर्ताओं को रियासत से बाहर जाकर संगठन बनाना पड़ा। भरतपुर के प्रमुख नेताओं में गोपीलाल यादव और युगल किशोर चतुर्वेदी शामिल थे।

प्रश्न: 91

सही उत्तर: A

व्याख्या: 11 अप्रैल, 1947 को धौलपुर के तसीमो गाँव में तिरंगे के सम्मान में पंचम सिंह और छत्तर सिंह पुलिस की गोलियों से शहीद हुए। यह घटना धौलपुर में राजशाही के अंत का प्रतीक बनी। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि धौलपुर का विलय तत्काल उत्तर प्रदेश में नहीं हुआ, बल्कि वह एकीकरण के पहले चरण 'मत्स्य संघ' का हिस्सा बना था।

प्रश्न: 92

सही उत्तर: B

व्याख्या: सागर मल गोपा की शहादत **3 अप्रैल, 1946** को हुई थी, आजादी के समय नहीं।

'राजस्थान का अंडमान' जैसलमेर **रियासत** को कहा जाता था, न कि सागर मल गोपा के निवास को। जैसलमेर अपनी पिछड़ी स्थिति और दमनकारी शासन के कारण इस नाम से कुख्यात था। अन्य विकल्प सही हैं: युगल किशोर चतुर्वेदी को राजस्थान का नेहरू कहते हैं, गोपा जी की शहादत 3 अप्रैल 1946 को हुई और पाठक आयोग ने उनके हत्याकांड की विवादास्पद जांच की थी।

प्रश्न: 93

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन 3 गलत है। मत्स्य संघ के प्रधानमंत्री **शोभाराम कुमावत** थे। गोकुल लाल असावा द्वितीय चरण (पूर्व राजस्थान) के प्रधानमंत्री थे। राजस्थान एकीकरण का आधार रियासती विभाग (5 जुलाई 1947) था। मत्स्य संघ (18 मार्च 1948) प्रथम चरण था जिसका नाम के.एम. मुंशी ने दिया। तृतीय चरण (18 अप्रैल 1948) में मेवाड़ का विलय हुआ और नेहरू जी ने उदयपुर में इसका उद्घाटन किया। ये तीनों तथ्य एकीकरण की प्रक्रिया के महत्वपूर्ण पड़ाव हैं।

प्रश्न: 94

सही उत्तर: B

व्याख्या: कारण असत्य है। वे समर्थक नहीं बल्कि विवश थे और अपनी सत्ता खोने के कारण दुखी थे; इसीलिए उन्होंने 'डेथ वारंट' शब्द का प्रयोग किया।

25 मार्च 1948 को राजस्थान संघ (द्वितीय चरण) के विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते समय बाँसवाड़ा के महारावल चंद्रवीर सिंह ने भावुक होकर यह प्रसिद्ध कथन कहा था। रियासती राजाओं को यह स्पष्ट दिख रहा था कि एकीकरण के बाद उनकी सदियों पुरानी संप्रभुता समाप्त हो जाएगी और वे भारत संघ के अधीन हो जाएंगे। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और व्याख्या सही है।

प्रश्न: 95

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 2 गलत है। 30 मार्च 1949 को केवल 'वृहद् राजस्थान' बना था; पूर्ण एकीकरण तो **1 नवंबर, 1956** को हुआ था। 30 मार्च 1949 को जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर के विलय से वृहद् राजस्थान बना। इसी कारण 30 मार्च को 'राजस्थान दिवस' मनाया जाता है। महाराणा भूपाल सिंह को उनकी वरिष्ठता के सम्मान में 'महाराजप्रमुख' बनाया गया, जो राजस्थान के इतिहास का एकमात्र ऐसा पद था।

प्रश्न: 96

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि संयुक्त राजस्थान (तृतीय चरण) के प्रधानमंत्री **माणिक्य लाल वर्मा** थे। शोभाराम कुमावत **मत्स्य संघ** (प्रथम चरण) के प्रधानमंत्री थे। अन्य विकल्प सही हैं: धौलपुर के उदयभान सिंह मत्स्य संघ के राजप्रमुख थे, गोकुल लाल असावा पूर्व राजस्थान के प्रधानमंत्री थे और मानसिंह द्वितीय वृहद् राजस्थान के राजप्रमुख बने थे।

प्रश्न: 97

wincompete

सही उत्तर: B
व्याख्या: कथन 2 गलत है। 1950 में राजस्थान को **'B' (ख)** श्रेणी का राज्य माना गया था, 'A' श्रेणी का नहीं।

पंचम चरण (15 मई 1949) में शंकरराव देव समिति की सिफारिश पर मत्स्य संघ का राजस्थान में विलय हुआ। 26 जनवरी 1950 को राजस्थान 'B' श्रेणी राज्य बना। 1 नवंबर 1956 को राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश पर अजमेर-मेरवाड़ा और आबू-देलवाड़ा का अंतिम रूप से विलय हुआ।

प्रश्न: 98

सही उत्तर: B

व्याख्या: कारण असत्य है। पद परिवर्तन का कारण **राज्य पुनर्गठन आयोग (फजल अली आयोग)** की सिफारिशें और संवैधानिक संशोधन था, न कि मानसिंह जी का संन्यास।

1 नवंबर 1956 को एकीकरण पूर्ण होने पर सातवें संशोधन के तहत 'राजप्रमुख' का पद समाप्त कर 'राज्यपाल' का संवैधानिक पद सृजित किया गया। यह परिवर्तन फजल अली आयोग (राज्य पुनर्गठन आयोग) की सिफारिशों का हिस्सा था। राजस्थान के पहले राज्यपाल गुरुमुख निहाल सिंह बने।

प्रश्न: 99

सही उत्तर: A

व्याख्या: राजस्थान के एकीकरण में कुल 8 वर्ष, 7 माह और 14 दिन लगे। अंतिम चरण में झालावाड़ का सिरोंज क्षेत्र मध्य प्रदेश को दिया गया और मध्य प्रदेश का सुनेल टप्पा क्षेत्र राजस्थान में मिलाया गया। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि अजमेर के विलय के समय वहां के मुख्यमंत्री **हरिभाऊ उपाध्याय** थे, न कि हीरालाल शास्त्री। शास्त्री जी राजस्थान के पहले मनोनीत मुख्यमंत्री थे।

प्रश्न: 100

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि राजस्थान के प्रथम राज्यपाल **गुरुमुख निहाल सिंह** थे। सवाई मानसिंह द्वितीय राजस्थान के अंतिम **राजप्रमुख** थे (जो 1949 से 1956 तक रहे)। अन्य विकल्प सही हैं: सुनेल टप्पा का विलय झालावाड़ में हुआ, पी. सत्यनारायण राव समिति ने जयपुर को राजधानी बनाने की सिफारिश की और अजमेर-मेरवाड़ा की अपनी पृथक विधानसभा 'धारा सभा' थी।

wincompete

आंसर की (Answer Key)

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
1	D
2	A
3	C
4	C
5	D
6	A
7	C
8	C
9	D

wincompete

10	B
11	B
12	D
13	D
14	A
15	C
16	B
17	D
18	C
19	D
20	C

प्रश्न संख्या **सही विकल्प**

21	D
22	A
23	C
24	C
25	D
26	B
27	A
28	D
29	B
30	C
31	A
32	B
33	A
34	B

wincompete

35	B
36	A
37	C
38	B
39	A
40	D

आंसर की (Answer Key)

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
41	C
42	B
43	A
44	B
45	A
46	B

wincompete

47	A
48	D
49	B
50	B
51	A
52	D
53	B
54	B
55	A
56	D
57	C
58	B
59	A

wincompete

60	C

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
61	B
62	B
63	A
64	D
65	C
66	B
67	A
68	D
69	A
70	C
71	A

wincompete

72	D
73	C
74	B
75	B
76	D
77	A
78	B
79	A
80	D

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
81	B
82	B
83	A

wincompete

84	A
85	A
86	B
87	A
88	A
89	A
90	C
91	A
92	B
93	B
94	B
95	A
96	D
97	B

wincompete

98	B
99	A
100	D